यशस्वी पत्रकार दादा साहेब आप्टे

-संजय द्विवेदी

एक राष्ट्र के रूप में भारत को हमारी पत्रकारिता के अनेक नायकों ने गौरवान्वित किया है। आजादी के आंदोलन से लेकर देश की विकास यात्रा में पत्रकारिता और उसके नायकों के समर्पण को भुलाया नहीं जा सकता। भारतीय पत्रकारीता अपने आरंभ काल से ही सामाजिक सरोकारों से जुड़ी रही है और उसने अपने राष्ट्रीय कर्तव्य के निर्वहन में कभी कमी नहीं की।

भारतीय पत्रकारिता जगत को जिन अनेक पत्रकारों ने अपने योगदान से समृद्ध किया है, उनमें श्री शिवराम शंकर आप्टे का नाम बहुत महत्वपूर्ण है। दादा साहेब आप्टे के नाम से पहचाने जाने वाले इस यशस्वी पत्रकार ने भारतीय भाषाओं को एक सूत्र में जोड़ने का काम किया। उन्होंने भारत में 'हिंदुस्थान समाचार' नामक एक समाचार एजेंसी की स्थापना की। यह समाचार एजेंसी एक बहुभाषी समाचार एजेंसी है, जो आज भी काम करते हुए भारतीय पत्रकारिता की सेवा कर रही है। दादा साहेब आप्टे बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। उन्होंने एक कार्यकर्ता, अधिवक्ता, व्यवसायी, संगठनकर्ता, साहित्यकार, चित्रकार, इतिहासकार और पत्रकार की भूमिकाओं में काम किया। हर भूमिका में वे पूर्ण नजर आए।

गुजरात के बड़ोदरा में सन् 1905 में दादा साहेब आप्टे का जन्म हुआ। आपकी प्रारंभिक शिक्षा दीक्षा भी बड़ोदरा में हुई। दादा साहेब आप्टे ने बाद में मुंबई से एल.एल.बी की परीक्षा पास की और नगर के एक विद्यालय में संस्कृत के अध्यापक के रूप में काम किया। मुंबई उच्च- न्यायालय में जब आपने वकालत प्रारंभ की तब आपकी मुलाकात उस समय के जाने माने विधिवेत्ता तथा भारतीय संस्कृति के विद्वान बैरिस्टर कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी से हुई। श्री आप्टे को मुंशी का मार्गदर्शन मिला तो उनकी प्रतिभा को चार चाँद लग गए। वकालत करते समय वे मुंबई के एक बड़े 'लिथो प्रेस' के कारोबार में सहयोगी भी रहे। इन्हीं दिनों 1931 के अंत में उनका सम्पर्क राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से भी हुआ, वह उनके जीवन का एक महत्वपूर्ण पड़ाव बना। उनका सम्पर्क संघ के तत्कालीन सरसंघचालक श्री माधवराव सदाशिवराव गोलवलकर से हुआ।

हिंदुस्थान समाचार एजेंसी की स्थापना :

संघ के संपर्क के आने में बाद आप्टे जी ने अपना निजी व्यवसाय बहुत सीमित कर लिया और और स्वयं को राष्ट्रसेवा के लिए समर्पित कर दिया। लेखन और पत्रकारिता में उनकी गहरी रूचि थी। इसलिए वे राष्ट्रसेवा में पत्रकारिता के माध्यम से योगदान करना चाहते थे। इस दौरान उन्होंने पत्रकारिता की परंपराओं और कार्यपद्धति को सीखने के लिए यू.पी.आई. (यूनाइटेड प्रेस आफ इंडिया) में काम किया। वहाँ अनुभव प्राप्त करने के बाद श्री आप्टे ने हिंदुस्थान समाचार नाम से भारतीय भाषाओं की संवाद समिति गठित की। एक दिसंबर, 1948 को 'हिंदुस्थान समाचार' का शुभारंभ हुआ। पाँच वर्ष के भीतर ही 'हिंदुस्थान समाचार' एक राष्ट्रीय समाचार एजेंसी बन गयी। यह एजेंसी, देवनागरी दूरमुद्रक (टेलीप्रिंटर) के माध्यम से देश के अंदर समाचारों का संकलन और प्रेषण करने लगी। तत्कालीन राष्ट्रपति डा. राजेन्द्र प्रसाद ने भारतीय भाषाओं की श्रीवृद्धि के लिए किए जा रहे इस प्रयास की सराहना की। भारतीय भाषाओं की समाचार एजेंसी स्थापित कर श्री आप्टे ने राष्ट्रीय एकता और सद्भावना पैदा करने का महत्वपूर्ण काम किया। इससे हिंदी सहित अनेक भारतीय भाषाओं की पत्रकारिता को संबल मिला। 'हिंदुस्थान समाचार' स्वतंत्र भारत की पहली स्वदेशी संस्था बनी। इस संस्था के माध्यम से आप्टे जी भारतीय भाषओं के बीच आपसी संवांद तो प्रारंभ कर ही सके साथ ही भाषाई सद्भावना का बीजारोपण भी उन्होंने किया । ऐसे प्रयासों से ही राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी की स्वीकार्यता भी बढ़ सकी है। भारतीय भाषाओं के बीच संवाद और सद्भावना पैदा कर उन्होंने इस काम को बखूबी किया।

पत्रकारिता में अभिनव प्रयोग:

आप्टे जी ने भारतीय पत्रकारिता में कई अभिनव प्रयोग किए। उन्होंने समाचार एजेंसी को व्यापक बनाने के लिए न सिर्फ भारतीय भाषाओं में कई पत्रकारों को स्थापित किया, प्रशिक्षित किया बल्कि विदेश यात्राएँ कर कई संपर्क जोड़े। आपने पूर्वी जर्मनी की यात्रा की एवं लंदन स्थित कामनवेल्थ न्यूज एजेंसी से भी संपर्क स्थापित किया । जिसके चलते 'हिंदुस्तान समाचार' के एक पत्रकार श्री बसंतराव देशपाण्डेय पत्रकारिता के विशेष अध्ययन के लिए वहाँ गए और उन्हें कामनवेल्थ न्यूज एजेंसी द्वारा लंदन में रहने का अवसर प्राप्त हुआ। भारत सरकार द्वारा गठित प्रथम प्रेस आयोग ने 'हिंदुस्थान समाचार' के कार्यकलापों की समीक्षा की है। इसमें आयोग ने कहा है कि देश कि जो तीन प्रमुख समाचार एजेंसियाँ हैं, उनमें यह एक है।

पत्रकारिता के क्षेत्र में नया प्रयोग करते हुए 'हिंदुस्थान समाचार' को सहकारिता के सिद्धात के आधार पर विकसित किया। श्री आप्टे का मानना था कि इससे एजेंसी आत्मनिर्भर तो होगी ही लोकतांत्रिक भी बनी रहेगी। यह प्रयोग निश्चत ही आत्मनिभरता की ओर एक बड़ा कदम था। 1957 में समिति के कर्मचारियों की सहकारी समिति बनाकर प्रथम सहकारी संवाद समिति बना दी गई। इसके फलस्वरूप भारतीय भाषाओं की प्रगति में आस्था रखने वाले सर्वश्री घनश्याम गुप्त, आर.आर.दिवाकर, डा. हरेकृष्ण मेहताब, हरिश्चद्र माथुर, डा. रामसुभग सिंह, डा. सरोजनी महिषी, डा. जयसुख लाल हाथी, गंगाशरण सिंह आदि का सहयोग प्राप्त हुआ।

आदर्श पत्रकारिता के नायक :

दादा साहेब आप्टे का पूरा जीवन रचनात्मकता से भरा हुआ है। एक संस्था की स्थापना, उसका विकास और नए पत्रकारों का निर्माण करने की अपनी जिम्मेदारी को उन्होंने बखूबी निभाया। वे पत्रकारिता में सच, साहस और तथ्यपरकता के पक्ष में थे। उन्होंने बहुत निर्भीकता से लेखन किया और अपने सहयोगियों को भी ऐसा करने के लिए प्रेरित किया। अपनी पूर्वी जर्मनी की यात्रा के दौरान उन्होंने कुछ लेख लिखे और प्रसारित किए, जिससे दिल्ली स्थित जर्मनी का वाणिज्य दूतावास नाराज रहा। आर्थिक दृष्टि से 'हिंदुस्थान समाचार ' को कुछ नुकसान भी उठाना पड़ा। किंतु अपनी स्वतंत्र और निष्पक्ष पत्रकारिता की भूमिका पर वो डटे रहे। दिल्ली स्थित एक देश के सूचना केन्द्र ने 'हिंदुस्थान समाचार' के कार्यकलापों पर अप्रसन्न होकर शुल्क देना बंद कर दिया। ऐसी तमाम विपरीत परिस्थितयों में भी वे कभी समझौतावादी नजर नहीं आए। वस्तुनिष्टता, तथ्यपरकता और सत्यनिष्ठा की कसौटी पर खरी उतर रही खबरों का प्रकाशन, प्रसारण उनका लक्ष्य था। आर्थिक दबावों के आगे न झुकते हुए सिद्धातों पर आधारित मूल्यों की पत्रकारिता का उन्होंने कीर्तिमान रचा।

एक पत्रकार के नाते आप्टे जी ने भारत का हर कोना देखा। इस मायने में वे एक यायावर पत्रकार थे। उनकी पूरी जीवन यात्रा में शब्दों के प्रति समर्थन का भाव दिखता है। वे स्वयं हिंदी, मराठी, गुजराती, अंग्रेजी और संस्कृत भाषा पर अपना अधिकार रखते थे। विविध भारतीय भाषाओं के विद्वानों और पत्रकारों के बीच जाकर उन्होंने सामाजिक सरोकारों और राष्ट्रीय एकता के भावों को भाषा के माध्यम से स्थापित करने का प्रयास किया।

महाराष्ट्र के समाज जीवन में लोकप्रिय और सम्मानित समर्थ गुरू रामदास के जीवन पर उन्होंने अंग्रेजी में शोध प्रबंध लिखकर उनके योगदान से विश्व मानवता को परिचित कराया। हिंदी के प्रख्यात कवि जयशंकर प्रसाद की चर्चित कृति 'कामायनी ' का आप्टे जी ने मराठी में अनुवाद किया। एक पत्रकार के साथ-साथ वे कलाकार भी थे। सिद्धहस्त चित्रकार और छायाचित्रकार के नाते उन्होंने अपनी एक खास जगह बनाई और समाज में सम्मानित हुए। बाद के दिनों में लगभग 22 देशों की यात्रा कर उन्होंने भारतीय संस्कृति और सभ्यता के प्रचार का काम किया।

उनके व्यक्तित्व का सही आकलन तो यही है कि वे कर्मयोगी थे, उनके रक्त की एक-एक बूंद में राष्ट्र भक्ति का भाव भरा हुआ था। उनका समग्र लेखन भारतीयता और देश की एकता अखंडता को समर्पित था। उनकी कलम सही मायने में

राष्ट्रधर्म को समर्पित थी। ऐसे प्रेरणापुरुष, भारतीय पत्रकारिता के उन्नायक की स्मृति हमें भारतीय भाषाओं को एक सूत्र में जोड़ने और राष्ट्रीय एकता के लिए प्रेरित करती है। संक्षेप में कहा जा सकता है कि दादा साहेब अनेक गुणों के धनी, अधिकारी विद्वान व्यक्ति थे। उनका व्यक्तित्व बहुत पारदर्शी था तथा उनके जीवन और कर्म में दूरी नहीं थी। अगर ऐसे व्यक्ति से हम प्रेरणा ग्रहण करें तो हमारा जीवन भी सफल और सार्थक हो सकता है।

अभ्यास

बोध प्रश्न

1. दादा साहेब आप्टे ने किस समाचार एजेंसी की स्थापना कर उसका एवं संचालन किया ?
2. दादा साहेब आप्टे का जन्म कहाँ हुआ ?
3. वकालत करते समय दादा साहेब की मुलाकात किस महापुरुष से हुई थी ?
4. किसने भारतीय भाषाओं की श्रीवृद्धि के लिए दादा साहेब आप्टे की सराहना की ?
5. स्वतंत्र भारत की पहली स्वदेशी समाचार एजेंसी कौन सी थी ?
6. दादा साहेब ने पत्रकारिता की परंपराओं और कार्यपद्धति को सीखने के लिए कहाँ काम किया ?
7. आप्टे जी ने हिंदी के किस प्रख्यात कवि की कृति का मराठी में अनुवाद किया ?
8. भारतीय संस्कृति और सभ्यता के प्रकार के लिए दादा साहेब ने लगभग कितने देशों की यात्राएँ की ?
9. दादा साहेब आप्टे किन-किन भाषाओं के जानकार थे।
10. दादा साहेब ने महाराष्ट्र के किस संत पर अंग्रेजी में शोध प्रबंध लिखा ?

योग्यता विस्तार

1. दादा साहेब आप्टे के जीवन से आपको क्या प्रेरणा मिलती है ?
2. यदि आप पत्रकार बनते हैं तो किन मूल्यों और सिद्धातों का पालन करेंगें ?
3. पाठ में दर्शाए गए भावों के आधार पर इस पाठ का कोई अन्य शीर्षक बताइए ?
4. हिंदुस्थान समाचार एजेंसी की कार्यपद्धति और स्थापना पर एक लेख लिखिए ?

शब्दार्थ

निवर्हन- निर्वाह करना अधिवक्ता- वकील उन्नायक- बढ़ाने वाला, उन्नति करने वाला

अभिनव- नया, आत्मनिर्भर-स्वयं पर निर्भर होना

❋ ❋ ❋